तरक़ीब नमाज़

मय क़ायदे इस्लाम ईमान

जिसमें मसाइले नमाज और अरकाने
इस्लाम मय ज़रूरयात मुस्लमीन
व फरांइज़े मोमिनात
बयान किये गये हैं।

प्रकाशक—

हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

मूल्य ।)

तरकीब नमाज़

मय

क़ायदे इस्लाम, ईमान

जिसमें मसाइले नमाज़ और अरकाने इस्लाम में ज़रूरयात मुस्लमीन नफ़राइज़े मोमिनान ब्यान किये गये हैं।
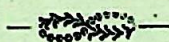
मुअल्लिफ़ये
मौलाना मौलवी बशीरउद्दीन कामिल, अदीब
फ़ाज़िल मुन्शी कामिल विशारद

प्रकाशक—
हिन्दी पुस्तकाय, मथुरा।

[मूल्य । आना]

तरक़ीब नमाज़ ।

ज़रूरी बातें:—

आज तक जितनी तरकीब नमाज पर किताबें उर्दू में लिखी गईं वह आसान उर्दू में ज़रूर थीं, फिर उनको पढ़ कर हर कोई इतना फ़ायदा नही उठा सकता थ। जितना उठाना चाहिये था--उन किताबों को भी दूसरे मौलवियों से समझने की जरूरत पड़ती थी। इन सब बातों को देखते हुए यह मुख्तसर मिलाँ जिसका नाम तरकीब नमाज़ है, लिखा गया है और उम्मीद की जाती है कि इसके पढ़ने वालों को नमाज़ का ठीक—ठीक अदा करना और इस्लाम को सच्चे अरकान से बखूबी वाक़फ़ीयत हो जायगी खास कर हमारे उन भाइयों को जो हिन्दी जबान से वक्त और मौक़ा न मिलने की वजह से वाकिफ़ हैं।

नमाज़ से पहले निहारते बदन और लिबास बहुत ज़रूरी है। लिहाजा पहले बदन को पाकी यानी गुस्ल, २—लिबास की पाकी ब्यान की जाती है।

यानी नहाना--पहले सब बदन को धोना इसके बाद वुज़ू करना, इसके बाद गुस्ल की नियत करना, इस तरह गुस्ल करता हूं मै वास्ते पाकीके, और दूर होने नापाकीके कलमा पढ़कर अव्वल सर पर पानी डाले फिर सीधे कांधे

पर इसके बाद उल्टे काँधे पर फिर सारे बदन पर पानी बहावे।

वुज़ू करने से पहले इस्तन्जा पाक करे—

इसके बाद अव्वल तीन मर्तबा हाथ धोये, फिर तीन मर्तबा कुल्ली करे और तीन मर्तबा नाक में पानी डाले, फिर तीन बार मुँह धोये। अब दोनों हाथों को तर करे, बाद इसके पहले सीधे हाथ पर तीन मर्तबा पानी लेकर उसी हाथ से कुहनी तक बहावे कि कुहनी के गट्टे तक कहीं सूखी जगह न रहे। फिर उल्टे हाथ पर तीन मर्तबा पानी बहावे अब मसा करें यानी दोनों हाथों में थोड़ा-सा पानी लेकर छिड़-कदे फिर दोनों हाथों को मिलाकर सर पर फेरे कि आगे से पीछे तक उतरे चले जायें और अँगूठों को तीन दफ़ा कानों के चारों तरफ़ घुमायें और वहाँ से उतारकर दोनों हाथों को कुहनियों से पंजों तक साफ़ करे और एक पंजे की उँगलियां दूसरे पंजे में डाले ताकि उँगलियों की घाइयों में कोई जगह सूखी न रहे। इसके बाद पहले सीधा पांव टखने तक धोये फिर उल्टा पांव टखने तक धोये कि कोई मुकाम सूखा न रहे।

१-औक़ात नमाज़ ज़रूरी और फ़र्ज़ नमाज़ पांच वक्त की है। १-फजर की नमाज़[सूरज निकलने से पहले होती है। इसमें अव्वल २ रकअत सुन्नत फिर २ रकअत फ़र्ज़]

२—जुहर की नमाज़ दो पहर यानी साढ़े बारह बजे बाद होती है, इसमें अव्वल ४ रकअत सुन्नत फिर ४ रकअत फर्ज फिर २ रकअत सुन्नत और फिर २ रकअत नफिल, इस तरह (बारह) १२ रकअत हुए।

३-असर की नमाज चार बजे से शुरू होती है। इसमें सिर्फ ४ रकअत फर्ज ही पढ़े जाते हैं। अगर पहले ४ रकअत सुन्नत भी पढ़ली जायें तो कोई हर्ज नहीं।

४-मग़रिब की नमाज़ सूरज छिपने के बाद पढ़ी जाती है, इसमें तीन फ़र्ज फिर दो सुन्नत और फिर दो नफिल पढ़े जाते हैं। इस तरह (सात) रकअत हुईं॥

५-इशा की नमाज़ मग़रिब की नमाज के बाद पढ़ी जाती है, चार सुन्नत चार फर्ज, दो सुन्नत, दो नफिल तीन वितर फिर दो सुन्नत और दो नफिल इस तरह कुल १७ रकअत नमाज़ हुईं।

नमाज में सबसे पहले और सबसे ज़रूरी बात नियत है।

नियत इस तरह बांधे:—

नियत करता हूं मैं वास्ते नमाज के और नमाज पढ़ता हूं मैं वास्ते अल्लाह के चार (या) दो, रकअत नमाज सुन्नत वास्ते रसूलअल्लाह के, मुँह मेरा तरफ काबेशरीफ़ के। [दो हाथों को कानों तक उठाने और अल्लाहो अकबर कहकर

दोनों हाथ नाफ़ के नीचे बांधले।

अगर फ़र्ज पढ़ने हैं तो नियत यूँ करः—

नियत करता हूं मैं वास्ते नमाज़ के और नमाज पढ़ता हूं मैं वास्ते अल्लाह के चार (या) दो रकअत नमाज़ फ़र्ज वासते अल्लाह के, मुंह मेरा तरफ़ काबे शरीफ़ के (अगर जमाअत से नमाज़ पढ़ता हो तो इतना और के ''पीछे इस इमाम के'') अल्लाहो अकबर कह कर दोनों हाथ कानों की लो तक उठावे और नाफ़ के नीचे बांधले,

और पढ़ेः—

सुबाहानाकल्ला हुम्म व बिहमदि—

ऐ खुदा तू पाक है और सब तारीफें तेरे ही

का व तबारा कसमो का व तआला

लिये हैं और तेरा नाम बरकत वाला है और सब तेरे ही

जद्दो का व लाइलाह ग़ेरो का

सब बड़ाई और जलाल है और सिवा तेरे और कोई माबूद नही

आऊज़ो बिल्लाहि मिनश्शैतुआ

मैं खुदा से पनाह मांगता हूं कि शैतान मरदूद के वसवसों से

निरंजीम

बचाइये।

फिर' बिस मिल्लाहि रहॅमानिर्रजीम' कहकर पढ़ेः—

अलहम दु लिल्लाहि रब्बिल आलमी

सब तारीफ़ अल्लाह को हैं जो तमाम जहाँनों का मालिक है जो बख़शिश करने

न हिर्रहमा निर रहीम मालिके या

वाला और रहम करने वाला है और कयामत के दिन

मिद्दीन ईया काना बुदो वईया का

का मालिक हैं। हम तेरी ही इबादद करते हैं औरतुभी से मदद

नस्ताईन इहदे नस्सिरा तल मुस्त—

चाहते हैं। तू हमको सीधे राह की हिदायत कर,

क़ी मा सिरातल लज़ीना अनअम

उन लोगों के रासते की जिन पर तूने इन्आम किया हैं

ता अलैहिम ग़ैरिल मग़दूबे अलैहिम

व उन लोगों की राह की जिन पर तेरा ग़जब हुआ और न उनकी जिन

— वलद्दालीन (आमान)

को गुमराह किया है, अल्लाह मेरी दुआ कबूल कर ॥

इसके बाद पढ़े:—

कुलहो वल्लाहो अहद अल्ला हुस्स

कहदे [ऐ मुहम्मद लोगों से] कि अल्ला एक है और बेनियाज़ है

मद-लम या लिद-व लमयो लद-व लम

न वह किसी से जना गया है और न किसी से जनता है और न उस

या कुल्लूह कुफ़वन अहद०❀

का कोई बराबरी वाला है, वह वाहिद है।

फिर रुकू करे यानी झुककर दोनों हाथ घटनों पर रक्खे और तीन मर्तबा कहे

सुबहाना रब्बीयल्ल अज़ीम

पाक है और बड़ा है मेरा परवरदिगार और फिर

समे अल्लाहो लिमन हमिदा

जो शख्स अल्ला की तारीफ़ करता है तो वह सुनता है। कहता हुआ खड़ा होजावे और अगर मुक़तदो हो तो

रब्बना लकल हम्द कहे

ऐ मेरे रब सब तारी केरे वास्ते हैं। और फिर सजदा करे सजदा में तीन या पांच मर्तबा कहे—

पढ़कर अल्लाहो अकबर कहे

सुबहाना रब्बीयल आला

मेरा परवरदिगार पाक और सब से बड़ा है, और अल्लाहो अकबर करता हुआ सर उठाये और फिर इसी तरह दूसरा सजदा करे। अब दूसरी रकअत अल्हमद से शुरू करे और कुलहोवल्ला पढ़ रुकू में उसी तरह जाये और अब बैठकर पढ़ेः—

अत्तैहियातोलिल्लाहि-वसमला वातो वत्तैयावातो

सारी इबादतें माली और जिसमें अल्लाके वास्तेहैं औरपाक

अस्सलामुअलैका ऐ योहन नवियो व रहमतुल्लाहें

दुरुद का तुहफा उसी के लिये है, ऐखुदाकेप्यारे-अल्लाहका

व वरकातुहू अस्सलामु अलैना

सलाम और बरकतें और रहमत आपपर नाजिल हों

व अला इबांदुल्लाहि स्स्वालिहीना-अशहदु

और उसकी बरकतें हमपरभीनाजिलहोंऔर खुदाकेनेकवंदों

अलाइलाइल्लल्लाहो—व अशहद अनामुहम्मद

मैं गवाही देता हूं कि नहीं कोई माबूद मगर एक अल्ला और मैं गवाही

न अब्दुहू व रसूलुहू

देता हूं कि मुहम्मद उसका रसूल बरहक है मगर दो रकअत नाज़ पढ़नाहोतो अब दूरुदशरीफ पढ़कर

सलाम फेरदे वरना खड़ा होजाय। और तीसरी और चौथी रकअत भी उसी तरह पढ़े।

दुरुद शरीफ़

यह दोनों दुरुदें अत्तैइ हियात के बाद पढ़कर सलाम फेरते हैं।

अल्ला हुम्मा सल्ले अलामुहम्मदिन—व अला
ऐ अल्ला दुरुद भेज़ प्यारेमुहम्मद पर और उनकी आलेपाक
आले मुहम्मदिन कमा सलैता अला
पर......................जैसे भेजीदुरुद तूने हज़रत
इबराहीमा व अला आले इबराहीमा इन्नका
इबराहीम पर और आले इबराहीम पर......ऐ खुदा तू
हमीदुम्मजीद ॥
बड़ी खूबियों वाला पाक हैं।

अल्ला हुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन कमा
ऐ खुदा बरकत भेज अपने प्यारे मुहम्मद और उसकी आला
बरिकत अला इबराहीमा व अला आले
पर जैसे भेजी बरकत तूने हजरत इबराहीम और उनकी

इबराहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद
आलपर तहक़ीक कि तू बड़ी खूबियों वाला और पाक है

———

दोनों दुरुदों के पढ़ने के बाद सलाम फेरे उस वक्त कहे
अस्सलामु अलैका वरहमतुल्लाहि
अव्वल सीधी तरफ़ फिर उलटी जानिब को सलाम फेरे
दुरुदों के बाद यह दुआ पढ़ फिर सलाम फेरे ॥

दुआ

अल्लाहुम्मा इन्नी आऊज़ बिक मिन अज़ाबे जहन्नम
ऐ खुदा तू बेशक पहनादे मुझको दोज़ख के अज़ाब से
व आऊज़ु बिका मिन अज़बिल क व
और पनाह दे मुझको अज़ाबे क़ब्र से............और
आऊज़ु बिक फ़ितनातिल मसीहिद्दज्जाल
और पनाह दे मुझको मसीहे दज्जाल के फितने से
व आऊज़ु बिक मिन फ़ित नातिल महिया
और ऐ खुदा पहनादे मुझको मौत औरजिंदगीके फितनेसे
वलमुमात अल्ला हुम्मा इन्नीं आऊज़ुबिका
ऐ ख़ुदा पनाह दे मुझको तो

गुनाहों से

इसके बाद सलाम फेरे अगर यह दुआ याद न हों तो कोई ज़रूरत नहीं दुरुदें पढ़कर सलाम फेरदे।

इशा की नमाज़ में चार सुन्नत, चार फ़र्ज़, दो सुन्ना और दो नफ़िल पढ़कर तीन वित्र पढ़े जाते हैं उन दो रकअत के बाद तीसरी रकअत में कुल् के बाद दुआ क़ुनूत पढ़ी जाती है, वह दुआ क़ुनूत यह है—

अल्ला हुम्मा इन्ना नसताईनो का व नसतग़फ़िरो

ऐ खुदा हम तुझसे ही मदद चाहते हैं और तुझ से ही बख़शिश

कावनो मिनो बिक व नतवक्कलो अलैका

चाहते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझी पर

वनुसनी अलैकल खैर व नशाकुरोका व

भरोसा करते हैं और तेरी खूबियां ध्यान करते हैं और

ला नक फ़ुरोक व नखलओ व नतरुको

तेरा शुकरिया अदा करते हैं और नहीं करते हैं तेरी नाफ़रमानी

मैंयफ़जिरो का अल्ला हुम्मा ईया का ना

और जो तेरी नाफ़रमानी करते हैं उनसे बेजार होते हैं।

ऐ खुदा

वलका नुसल्ली व बसजुदो व इलैका

हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरी ही नमाज पढ़ते है, और तुझी को

नसआ व नह फ़िदू व नर जो रहमतका

सजदा करते हैं और तेरी तरफ़ दौड़ते हैं और तेरी ही महरबानी की

व नखशा अजाबका इन्ना अजाबका

उम्मीद करतेहैं और तेरेही अजाबसे डरतेहैं और बेशक तेरा

बिल कुफ़्फ़ारे

अजाब काफ़िरों से नज़दीक तर है

तरकीब नमाज़ जनाज़ा

निअत—निअत करता हूं मैं वास्ते नमाज़ जनाज़ा मैं चार तकबीरों के और नमाज़ वास्ते अल्ला के और सवाब वास्ते इस मैयत के मुँह मेरा तरफ़ काबे शरीफ़ के अल्लाहो अकबर निअत बांध कर पढ़े।

सुबहाना कल्लाहुम्मा व बिहमदिक वताबाराक

ऐ खुदा तेरी जात अपनी खूबियों के साथ पाक है और
बड़ा है तेरा नाम
समो का वत्ता ओलाजद्दू का व जल्ला सना—
और बड़ी है तेरी शान और तारीफ़, और कोई नहीं है
ऊका व लाइलाहा ग़ैरों का पढ़कर अल्लाहो अकबर कहे
तेरे सिवा माबूद
अब दूसरी तकबीर में दोनों दुरुदें पढ़े और तकबीर रहे॥
उसके बाद अगर जनाज़ा मर्द बालिगका हो तो यह दुआ पढ़े-

अल्लाहुम्मग़ फिर लिहैयना व मैयतमा व
ऐ खुदा तू हमारें जिन्दों, मुर्दों, छोटों और बड़ों, हाजिर
शाहिदनो व गांयबना व सग़ीरना व कबीरना
और ग़ायब वह मर्द हूं या औरत सबको बख्शदे
वजीकरन व उनसाना अल्लाहुम्मा मत
ऐ अल्ला तू हम में
अहैयतहू मिन्ना फअहयही अलल इसलाम
से जिसको जिन्दा रक्खे उसको इसलाम पर जिन्दा रख
वमन तवफ्फैत हू मिन्ना फतवफ्फह अलल
और हमारे में से जिसको त उठाना चाहे वाईमान उठा

ईमान

अगर लड़के की मैयत हो तो यह दुआ पढ़े—

अल्ला हुम्मा अजलहो लना फरतूम व अजल

ऐ खुदा तू इस लड़के को हमारे लिये आखिरत का सामान

हो लना अजरमू व जख़रमू व वजअलहो

बना और हमारे लिये इसको सवाब का ज़खिरा बना

लना शाफियम वा मुशफ्फिअन

तू इसको क़यामतके दिन हमारी शिफअत करनेवालावना

अगर मैयत लड़की की हो तो 'हो' की जगह 'हा' पढ़ना चाहिये।

ईमाने मुफस्सिल

आमन्तु बिल्लाहि व मलायकतिही व कुतुविही

ईमान लाया मैं उस फरिश्तोंपर और उसकी किताबों पर

व रसूलही वल योमिल् आखिरे वल क़दरे

और उसके रसूलों पर और क़यामत पर और तक़दीर की

खैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआलो

अच्छाइयों और बुराइयों परजो अल्लाह की तरफ से है ॥

वल वअसे बादलमौत

और मरने के बाद फिर उठने पर ।

ईमाने मुजमिल

आमन्तु बिल्लाहि कमा हुवा बि असमा

ईमान लाया मैं अल्लाह पर कि जैसी उसकी जात है

यही व सिफ़ातिही व कुबिल्तो जमीया

अपने नामों के साथ और सिफ़तों के साथ और कुबूल

अहकामिही

किये हैं उसके तमाम हुक्म ।

अहकामेवुज़ू :—

नियत:—

अतज्जाओलिरफ़ु इन हदसे

फ़र्ज़—वुज़ू करता हूं मैं नापाकी दूर करने के लिये वुज़ू में चार बातें फर्ज़ हैं (१) पूरा २ मुंह धोना । (२) कुहनियों तक हाथ धोना । (३) पांव सर का मसा करना । (४) टखनों तक पांव धोना ।

सुन्नत—वुज़ू में तेरह सुन्नत हैं (१) बिसामल्लाह हंचूं पढ़ना, (२) तक हाथ धोना, (३) मुंह और

नाक में पानी डालना (५) मिसवाक करना (६) नियत करना (७) तरतीब रक्खना (८) उङ्गलियों और (९) दाढ़ी का खिलाल करना (१०) कानों और (११) तमाम सरका मसाहना (१२) पहिले सीधा पैर धोना (१३) हर हिस्से का तीनबार धोना ।

नवाक़िसे वुज़ू यानी वुज़ू किन किन बातों में टूट जाता है । वुज़ू करके धोक लगाकर बैठे और नींद आजावे तो वुज़ू टूट जावेगा

रींह के खारिज होने ने से वुज़ू टूट जायेगा

मुंह भर कि कै आजाय वुज़ू टूट जायगा

पीप या खून बहने से बुज़ू टूट जाता है

नशे की मस्ती से वुज़ू टूट जाता है

बेहोश होने से वुज़ू टूट जाता है

नमाज में बोलने या कहकहा लगाने से वूज़ू साक़ित हो जाता है, बरहना (बिलकुल नगा) होंने से वुज़ू टूट जाता है, किसी की शर्मगाह को देखने से धुजू टूट जाता है बेहूदी बातें करने, नङ्गा या गालियां देने से वुज़ू मुकरुह होजाताहै घुटनों से ऊपर देखनेसे वु.जू मुकरुह होजाता है।

अहकामि गुस्लः—यानी नमाज़ या पाकी के लिये नहाने के बारे में।

नवैतो अनअग़तुसिला मिन गुस्ल

मैं गुस्ल करता हूं दूर होने नापाकी

लिलजना बता लिरफ इल हदसे

और आने पाकी के लिये।

मूजिबात गुस्ल—यानी किन किन बातों से गुस्ल वाजिब होजाता है।

चार चीजों से वाजिब हो जाता है।

(१) मनी का शहवत के साथ निकलना।

(२) इहतलाम होना—अगर इहतलाम सोतेपर हुआ और सुबह को कपड़ों पर धब्बा न पाया गुस्ल वाजिब नहीं अगर मनी के धब्बा है तो गुस्ल वाजिब होगया। मनी से पहले जो रतूबत मसास करने या बोसा देने या प्यार करने स निकलती है उसको मजी कहते हैं इस से गुस्ल वाजिब नहीं होता मनी वह कहलाती है जो शहवत के साथ निकलती है।

फरायजे गुस्ल गुस्ल में तीन फर्ज हैं (१) मुंह में पानी डालना (२) नाक धोना अन्दर से (३) सारा बदन बाहर से तुर करना ॥

सुन्नते गुस्ल गुस्ल में पांच सुन्नत है [१] पहचों तक दोनों हाथों को धोना [२-३] इस्तंजा करके निजासत पाक करना [४] वुज़ू करना [५] तीनबार बदन पर पानी बहाना, हाजते गुस्ल के सिवा चार मौकों पर और गुस्ल वाजिब हैं [१] जुमा [२] ईद [३] अहराम [४] अरफ़ा

फरायजे नमाज़, नमाज़ में तेरह फर्ज हैं। इनमें से छः खारुजी और सात दाखली हैं।

फरायजे खार्जी—१ वुज़ू या गुस्ल करना २ निजा-सत दूर करना ३ नामाज़ के वक्त की पहचान ४ मुंह काबे की जानिब करना ५ सतरे औरत यानी बदने खास को ढांपना ६ नियत नमाज़।

. फरायजे दाखली—१ तकबीरे तहरीया कहना २ खड़े होकर रिकअत पढ़ना ३ रुकू करना।

(४) सजदा करना (५) क़मूद (६) तशहुद (७) क़ादा बैठना

वाजिबाते नमाज़ नमाज़ में बारह वाजिब हैं (१) अल्हम्द के साथ कोई सूरत मिलाना (२) क़िरअत (३) अत्तहियात पढ़ना (४) क़ादा (५) वित्रों में (६) दुआ कुनूत पढ़ना (७) तकबीर के साथ हाथ उठाना इन के अलावा वाजिब हर ईद में है।

सुन्नत नमाज़ में सत्तरह सुन्नते हैं

कानों तक हाथ उठाना नाफ़ के नीचे दायें हाथ पर बांये हाथको बांधना और औरतें सीने परबांधें, सबहाना पढ़ना पहली रकअत में ताऊज़ अलहम्द के बाद आमीन कहना तकबीराते तहरीमा के सिवा सब मसनून हैं ईद की दूसरी रकअत में तकबीर वाजिबहैं फिर रुक में तीन तसबी हाथ हैं और तीन सिजदे में रुकू के बाद सीधा खड़ा होना-जिसदां के दरमयान वक्फ़ा चाहिये—इमाम जब समे अल्लाह पुकारे तौ तमाम मुक़तदियों को "रब्बन.लकलहम्द" कहना चाहिये मर्द उल्टे पाँव पर और औरत चूतड़ां पर बैठे आखिर सलाम फेरने के बाद दुआ मांगो।

———

मुफ़सिदाते नमाज़ यानी किन किन बातों से नमाज फ़ासिद (टूट) होजाती है।
तेरह चीजों से नमाज़ फ़ासिद होजाती है।
१– किसी को नमाज़ में क़सदन खलाम करने से नमाज़ साकित होजाती है। या सलाम सुनकर जवाब देना, दुनियां के लिये रोये या कुछ कहे, आह उफ़ करे, खाय या पीये, ज़ोर से कसदन खकारे, या किसी बात का जवाब दे, या देखकर क़ुरआने पढ़ै या खुदा से इस तरह मांगे जैसे आदमी २ से मांगता है तीन मर्तबा क़सदन खांसे या खुजलाये, गरज़ तीन दफ़ा कोई काम करे नमाज़ फ़ासिद होजायगी।

पंज कलिमात

अव्वल

अव्वल कलिमा तैयबा

लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसू

नहीं कोई माबूद सिवाये खुदा के और मुहम्मद उसके

अल्लाह

रसूल हैं

दोयम कलिमा शहादतः—

अशहदु अन लाइलाह इल्लल्लाहु व अश
गवाही देता हूं मैंकि सिवा खुदा के और कोई माबूद नहीं और
हदु अन्न मुहम्मदन अब्दहू व रसूलुहू
वह एक है और मुहम्मद उसके रसूल बरहक़ हैं

सोयम कलिमा तमजीदः—

सुबहानल्लाहे वलाहम दुलिल्लाहे वला
अल्लाह पाक है और तमाम तारीफें उसी के लिये हैं और नही
इलाहा इल्लल्लाहु अकबर व ला
है कोई माबूद सिवाये अल्लाह के, अल्लाह बड़ा है, और नहीं है
हौलावला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अली
ताक़त सिवाये अल्ला की तौफीक के और वह बहुत बड़ा और
इल अज़ीम
बड़ी शान वाला है।

चहारम कलमा तौहीदः—

लाइलाह इल्लल्लाहु वादुह ला शरीकलहु
नहीं है कोई इबादत के लायक मगर अल्लाह और न
लहुल मुल्को व लहुल्हम्दो व हवा

उसका कोई शरीक है और वह एक है उसी के लिये

अला कुल्ले शहन क़दीर—

मुलक है और तारीफ़ है और वह सब चीजोंपर कादिर है

पंजुम कलमा रद्देकुफ़:—

अल्लाहुमा इन्नी आऊज़ु बिकामिन

ऐ अल्लाह बेशक मैं तुझसे पनाह मांगता हूं इस बात

अन उसरिका बिका शैयम व अना

से कि शरी बनाऊँ तेरा किसी को और मैं जानता हूं

आलम बिही तुब्तो अनहो व तबरीतो

इसको और पनहा मांगता हूं तुझ से इस बात

मिनल कुफ़ वशिशरके वलमआसी

से कि मैं नहीं जानता हूं इसको—मैंने तो बाकी

कुल्लिहाव असलम्तो व आमन्तो

उससे और मैं बेजार हुआ कुफ़ से और

व अक़वलो लाइलाहा इल्लल्लाहो

शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और

मुहम्मदुर रसूलल्लाहि

विद्अत से– और चुग़लखोरी और गन्दी बातों से और बहुतान से और सब गुनाहों में ईमान लाया और मैं कहता हूं कि अल्ला के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सच्चा रसूल है।

आदाबे मसजिद-जब कोई नमाज पढ़ने की नियत से मसजिद में दाखिल हो तो पहिले बिसिल्लाह पढ़कर अपना सीधा पांव मसजिदके फर्श पर रक्खे फिर बांया पांव रक्खे, मसजिद में दुनियां की बात न करें बड़ा गुनाह है और न खेल कूद जायज़ हैं। मसजिद में जातेही वुजू करे फिर दो रकअत नमाज़ सरीयतुल मसजिदपढे। और फिर यादेहक में मशगूलरहे। चूंकि मसजिद में सवाल करना हराम है इसलिये भीक मांगने वालों को सवाल करने से रोकना चाहिये। इसतरह देना भी मसजिद में जायज नहीं वल्कि बिहतर तरीका यह है कि फकीरों को बाहर खड़ा करें और निकलते वक्त नमाजियों से मागें। मजदिद में बेहूदा अशआर पढ़ना जायज़ नहीं बिला ज़रूरत मसजिद में सोना मकरूह है।

लेकिन अफ़सोस है आजकल के मुसलमानों पर कि उन्होंने मसजिद को सराय या जरूरत गाह वना लिया है। मसजिद का दरवाजा नमाजियों के लिये

बन्द का मकरूह है। मसजिद की छत पर पेशाब पखाना या जमा करना हराम है। जुआ खेलना या ऐसा ही नाजायज़ काम करना गुनाह है।

मसजिद के अन्दर थूकना, हजामत बनवाना वुज़ू या कुल्ली करना मना है। मसजिद के अन्दर नशा की हालत में जाना गुनाह है मसजिद में लहसन प्याज, मूली खाम हुक्का पीकर बगेर कुल्ली किए आना मकरुह तहरीमी है। मगर अफ़सोस है कि आजकल मुसलमान ऐसे निडर होगये हैं कि इन में से किसी बात की परवाह नहीं करते मसजिद को रास्ता नाना जायज नहीं।

मसजिद में किसी पेशे वर कों अपना पेशां करना जायज नहीं।

इस्तन्जे का ब्यान

जब कोई शख्स पेशाब या पाखाना करने लगे तो उसे चाहिये कि कहीं अलग परदे की जगह में जाय और शहर से या आबादी से बहर जाये तो इतनी दूर जाये कि लोगां की नज़र से गायब हो जाय

और अगर पाखाने में जाये तो बिसमिल्लाह कहकरपहले बायां पाँव रक्खे फिर दायां पांव रख बैठ जाय। बैठने के बाद जिस्म को खोले और बायें पाँव पर जोर देकर बैठे ! इस हालत में बातचीत करना जायज़ नहीं अपनी शर्मगाह को न देखे, फारिग़ होने के बाद बकदे जरूरत ढेलों से काम ले, निकलते वक्त पहले दाहिना पांव बाहर निकाले।

पेशाबके बाद ढेले का इस्तेमाल इतनीदेर करें कि नमी का शक बाकी न रहे। नमाज़ से पहले पानीसे इस्तन्जा करे वरना नमाज़ न होगी।

अज़ान का तरीक़ा

जो शख्श अजान देना चाहे पहले वुजू करले और किसी बुलन्द मुकाम पर खड़े होकर काबे की जानिब मुंह करके व आवाजे बुलन्द आज़ान पढ़े, दोनों कानों में अँगुश्ते शहादत देले और पढ़े—

अल्लाहु अकबर—अल्लाहु अकबर

अल्लाह सबसे बड़ा है—अल्लाह सबसे बड़ा है।

अल्लाहुअकबर—अल्लाहुअकबर

अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है।

अशहुद अन लाइलाहा इल्ल ल्लाह

मैं गवाही देता हूँ कि सिवाय अल्लाह के और कोई

अशहुद अन्ना लाइलाह इल्लल्लाह

माबूद नहीं—मैं गवाही देता हूँ कि सिवाय, अल्लाह के और कोई माबूद नहीं

अशहुद अन्ना मुहम्मदुररसूलल्लाह

मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद खुदा के रसूल हैं।

अशहुद अन्ना लाइलाह इल्लल्लाह

मैं गवाही देता हूँ कि बेशक मुहम्मद खुदा के रसूल हैं।
फिर अपने मुंह को दाहिनी तरफ़ करके कहे

हैया अलस्सलाह-हैया अलस्स-

आओ नमाज के लिये आओ नमाज के लिये

लाह—फिर बाईं तरफ़ मुँह करके कहे

हैया अलल फलाह-हैया अलल फलाह

निजात के लिये आओ, आओ निजात के लिये लेकिन इन दोनों कलमों पर पैर और सीना काबे की जानिब से न हटे ॥ फिर पढ़े:—

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

लाइलाह इल्लल्लाह

अगर सुबह (फ़जर) की आजान दे तो हैया अलल फ़लाह के बाद कहे:—

अस्सलातु इबैरुम मिनन्नौम- अस्सलातु लैरुम मिनन्नौम

नमाज सोने से अच्छी है—नमाज़ सोने से अच्छी है ॥

इमाम के पीछे जब तकबीर पढ़ते हैं तो हैया अलल फ़लाह के बाद कहते हैं—

क़द क़ा मतिस्सलातु—क़द क़ा मतिस्सलातु

तहक़ीक़ नमाज़ क़ायम होगई.

फिर दो मर्तबा अल्लाहु अकबर कहकर लाइलाह इल्लल्लाह पढ़े-नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते हैं:—

अल्ला हुम्मा रब्बा हाज़िहिद्दावतत्तामते

अल्लाह तू परवरदिगार है, इस कामिल बुलावे का और

वस्सलातिल क़ायमते आते मुहम्मदा

उस नमाज़ का जो क़ायम होने वाली—मुहम्मद को

निल वसीलता वल फ़ज़ीलता वद्द

वसीला और बुज़ुर्गी और बुलन्द दर्जा दे और

रजर्ता फ़ी अता व बअसह मक़ा—

उनको मुकामे महमूद में खड़ा करना जिसका तूने

मम महमूदा निल लज़ी व अत्तहू

उनसे वादा किया है और उसमें कयामत के

वरज़ुकना शफ़ाअतह योमिल

दिन उनकी हमें शिफ़ाअत नसीब कीजियो ॥

स्यामह—इन्नका ला तखलिफुल
बेशक तेरा वादा झूटा नहीं होता
मियाद बिरहमतका यौ अर हमर्राहि
ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले अपनी
मीन
रहमत से

नमाज़ जुमा

हर आक़िल और बालिग मुसिलमान पर लाजिम है कि जुमे का इहतमाम जुमेरात से करे जुमे के दिन नमाज़ से पहले कपड़े साफ़ करे और जहांतक होसके अपने को साफ़ बनाये क्योंकि जुमा ही 'ईदलमोमिनीन' कहागया है अगर खुशबू मौजूद न होतो खरीदे जुमेके दिन नमाज़ फ़जर के बाद ग़ुस्ल करके बालों में तेल डाले।
जामें मसजिद में बहुत सवेरे जाय।
जब खुतबा शुरू हो तौ काबेकी तरफ मुंह करके खामोश बैठे और खुतबा सुने,जुमे की सुन्नतें जो खतबे से पढ़नी

चाहिये थीअब साकित होगई। लिहाजा उनको न पहले और न आखिर में पढ़ना चाहिये जैसे कि आज कल दस्तूर है चूंकि खुतबे का सुन्ना वाजिब है इस लिये सुन्नत की तरफ रुजू करना खिलाफ नक़ल व अक्ल है, जुमे के दिन सिर्फ दो ही फर्ज पढ़े जाते हैं और बाक़ी सुन्नतें यानीं ४ सुन्नत २ फर्ज ४ सुन्नत २ सुन्नत २ नफिल कुल १४ रकअतें हुई ॥

———

पाक-विज्ञान

(पाक शास्त्र की अद्वितीय पुस्तक)

यह पुस्तक स्वादिष्ट और मधुर भोजन बनाने के लिये बिलकुल गुरु का काम देती है। इसमें साधारण चीजों से ही नाना प्रकार के भोजन बनाने की सरल विधि दी गई है। इसमें सब तरह की भुजिया और रसदार तरकारियां अनेक प्रकार की दाल और भात, सब अनाजों की रोटियां दूध से बनने वाली सब चीजें कढ़ी, अचार, चटनी, रायता, पूड़ी, कचौड़ी, परांमठे, मीठे पकवान, नमकीन पकवान, तथा सब तरह की देशी और बंगाली मिठाइयां अनेक प्रकार से बनाने की विधियां दी गई हैं इसके अतिरिक्त खाने की किन २ चीजों का क्या गुण है, इसका विस्तार पूर्वक वर्णन है। ऐसी पुस्तक प्रत्येक परिवार में रहनी चाहिये।

मोटे और चिकने कागज़ पर छपी ३०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ३) रुपया।

अमेरिकन स्त्री शिक्षा

यह पुस्तक अमेरिका देश की स्त्रियों की शिक्षा की है वहां की स्त्रियां अपने पतियों को कैसे वश में रखती हैं, सास सुसर से उनको कैसे व्यवहार करना पड़ता है, निकम्मे पति को कैसे सुधारना चाहिये आदि ऐसी ऐसी धार्मिक बात लिखी हैं. कीमत १।)

मंगाने का पता—हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा।

मुद्रक—बाबू मोहनलाल गुप्ता, हिन्दीपुस्तकालय प्रेस, मथुरा।